सही बातें

प्रीति

आशीषानुकंपा

शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज

कृतिकार

श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

प्रकाशक

समर्पण समूह

जैनं वचनं सदा वंदे

आशीषानुकंपा

शताब्दी देशनाचार्य 108 श्री विशुद्धसागर जी मुनिराज

कृतिकार

श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

संपादन / सहयोग

श्रुतप्रिय श्रमण अप्रमितसागर जी मुनिराज
सहजानंदी श्रमण सहजसागर जी मुनिराज

कृति का नाम

सही बातें
प्रीति

संस्करण

2023 : 1008 प्रतियाँ

प्राप्ति स्थान

भोपाल : 91790-50222

जबलपुर : 98276-07171

इन्दौर : 98260-10104

इन्दौर : 94253-16840

भीलवाड़ा : 63766-49881

आकल्पन एवं मुद्रण

डीसेन्ट ग्राफिक्स इंदौर

मो. 98260-14047

शुभाशीष...

वस्तु स्वभाव में परिणामी एवं अपरिणामी है। द्रव्य-दृष्टि से अपरिणामी व पर्याय दृष्टि से परिणामी, पर जो इस सत्य को नहीं जानता वह दूसरे के लिए बोलता है - अमुक व्यक्ति बदल गया, जबकि वह स्वयं भी बदला है। एक-ही समय में परिणाम व अपरिणाम धर्म विद्यमान रहता है, इस **सही बात** को जो जानता है, वह सत्यज्ञाता पर में दोषों का अन्वेषण नहीं करता है, अपितु वस्तु के वस्तुत्व को सम्यक् जानकर मध्यस्थ हो जाता है।

इसी भावना से ओत-प्रोत **तत्त्वान्वेषी श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी ने "सही बातें"** नामक कृति का सृजन कर वागीश्वरी के कोष को वर्धमान किया है। वे इसी प्रकार सम्यक् श्रुताभ्यास पूर्वक साहित्य-सृजन कर के संस्कृति का संवर्धन करें, यही शुभाशीष है।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

शताब्दी देशनाचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी मुनिराज

मेरी बात-सही बात

अनेकों चिंतकों ने अपने अभिनव, अभिजात और आत्मोन्मुखी चिंतन से इस भारतीय तत्त्वमनीषा के वाङ्मय को सुसंवर्धित किया है। वही चिंतन समीचीन-चिंतन कहलाता है, जो सिद्धांत, तर्क और पूर्वाचार्यों की कथनी से मेल खाता है।

हर व्यक्ति की बातें सही नहीं होती और हर व्यक्ति की बातें गलत भी नहीं होती, कई बार समझने का नज़रिया भी गलत होता है। इस कृति के सृजन का हेतु ऐसे ही कुछ गलत नज़रियों को सही करना है।

विश्ववंद्य प्रभु वर्धमानस्वामी के अहिंसामय सत्यार्थ सिद्धांत जन सामान्य तक पहुँचाने के लिये शब्द और भाषा दोनों ही जनपद संबंधी होना अनिवार्य है। इसी कारण से यह सृजन गुरुप्रसाद, आगमाध्ययन, स्वानुभव और स्वयुक्ति के साथ-साथ सुगम शब्द और भाषा से मैंने अभिसिंचित किया है।

आशा है लघुकृत्य के रूप में प्रस्तुत मेरी कुछ **सही बातें** चिरकाल से प्रचलित गलत बातों को चिरकाल तक सही रखने में सहायक बनेगी।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः

श्रुतसंवेगी श्रमण आदित्यसागर जी मुनिराज

दुनिया
देखने में ही बड़ी दिखती है
पर असल में
बहुत छोटी है,
खुली आँखों से देखने पर
दुनिया बड़ी दिखती है,
पर जैसे ही आप
आँखें बंद करके देखते हैं
तो वह छोटी
बहुत छोटी हो जाती है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किस्मत के रूठने पर
उसे मनाने का
एक ही तरीका है
वो है मेहनत,
मेहनत से
किस्मत भी बदलती है
और
ज़िन्दगी भी...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

वस्तु में कोई
प्रिय-अप्रियता नहीं होती,
प्रिय-अप्रियता तो होती है
हमारी सोच में,
सोच अच्छी है
तो सभी प्रिय लगते हैं
नहीं तो अप्रिय ही लगते हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर
कोई आपसे
ईर्ष्या करता हो
तो चिढ़िये मत
खुश हो जाइये,
क्योंकि
ईर्ष्या उसी से होती है
जो ऊपर उठ चुका हो,
या फिर
ऊपर उठ रहा हो...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सुख के काल में
जो धर्म को भूल जाते हैं,
दुःख के काल में
पुण्य उनको भूल जाता है
और
धर्म उनसे
दूर हो जाता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

भाग्यशाली लोगों को
अवसर मिलते हैं
और
बुद्धिमान लोग
अवसर बनाते हैं,
अगर आप
भाग्यशाली नहीं हैं
तो बुद्धिमान बनने का प्रयास करें,
क्योंकि
जीत
अच्छे अवसरों से ही मिलती है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर
आपके कारण कोई दुःखी है
तो आप भी
दुःख के अधिकारी हैं,
क्योंकि
जो आप देंगे
वो ही आपको वापस मिलेगा...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपका
सबसे बड़ा शत्रु अज्ञान है
और
सबसे बड़ा मित्र ज्ञान है,
ज्ञान के बढ़ते ही
शत्रु भी मित्र हो जाते हैं
और
अज्ञान बढ़ते ही
मित्र भी शत्रु हो जाते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिन हाथों से आप
प्रार्थना करना जानते हैं,
काश !
उन हाथों से
सेवा करना भी सीख जायें;
तो शायद
प्रार्थना कभी न करना पड़े...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप चाहें तो
अपनों की याद में
तड़फ भी सकते हैं
और
अपनों की यादों के सहारे
जी भी सकते हैं,
क्योंकि
यादें तो यादें हैं
और
अपने तो सपने हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जलने वाले का
सबसे बड़ा दुश्मन
उनके अंदर बैठी
उनकी ही जलन है,
दुश्मन एक बार
उनका बुरा करने में चूक जाये,
पर जलन की भावना
हमेशा उनका बुरा करती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जैसे
नीम का फल
कभी भी अच्छा नहीं होता,
वैसे ही
बुरे कामों का फल
कभी भी अच्छा नहीं होता...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिस दिन
आपके अंदर से
अपने और पराये का भाव
खत्म हो जायेगा,
उसी दिन से
उदारता आपके अंदर
प्रवेश कर जायेगी...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपने लक्ष्य को
पाने के लिये
गिरने का डर छोड़कर
निरंतर प्रयास करें,
आपको सहारा भी मिलेगा
और जीत भी...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

उधार
आपके अपनों को
पराया बनाता है
और
आपको नीचा भी दिखाता है,
इसीलिये
उधार न तो लें
न ही दें...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

छोटा इंसान
बड़ा तभी बनता है,
जब वह
लगन और भाग्य को
निरंतर बढ़ाता है;
ऊँचाइयों को पाना है
तो लगन लगाइये

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुनिया में
उपदेश सुनने वालों की संख्या
बहुत ज़्यादा हैं
और
गुनने वालों की संख्या
बहुत कम है,
लेकिन
जो गुनते हैं
वो ही दुनिया से पार हो पाते हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

चाहे छोटे हों
या फिर बड़े
नियम जरूर लें,
क्योंकि
नियम ब्रेक की तरह होते हैं
जो आपको
दुर्घटना से बचाते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आपको
अनाचार से बचना हो
तो नियमों को पालें,
नियम आपको
आचरण में ढालते हैं
और
सच्चाई के पथ पर चलाते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कार्य के
पूर्ण न होने तक
उसे किसी को भी न बतायें,
अगर वो कार्य
पूर्ण नहीं हुआ
तो आपको
शर्मिन्दा होना पड़ सकता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मान
और
काम की भावना को रोक पाना
बहुत कठिन है,
जिसने
इन दोनों को जीत लिया
उसकी ज़िंदगी सँवर जाती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

क्रोध बढ़ते ही
आप छोटे हो जाता हैं
और
अपनों से दूर हो जाते हैं,
रही बात संबंधों की
तो वे भी न जाने
कहाँ गुम हो जाते हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जितना हम
दूसरों के गुणों से सीखते हैं,
उससे अधिक हम
दूसरों की
गलतियों से सीख सकते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिसने
जितना दु:ख सहा हो,
वो उतना ही
बड़ा आदमी बनता है
इसीलिये
दु:खों को बुरा मत मानिये
वो भी अच्छे हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आपको
अच्छा कवि बनना है
तो अपनी कल्पनाओं को
असीम बनाइये,
क्योंकि
कविताओं को
पंख देने वाली
आपकी कल्पनायें ही होती हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कुछ लोग
अच्छी नज़र वाले होते हैं
और
कुछ लोग
अच्छे नज़रिये वाले होते हैं,
अच्छी नज़र वालों को
दुनिया सुन्दर लगती है
और
अच्छे नज़रिये वाले
दुनिया को सुन्दर लगते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

विकल्पों से दूर होना ही
विकल्पों को दूर करने का
सबसे सुन्दर उपाय है,
क्योंकि
कीचड़ में रहकर
कोई भी
स्वच्छ नहीं हो सकता.
कीचड़ से दूर होकर ही
स्वच्छ हुआ जाता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किसी का दिल
टूटता हो तो टूट जाये,
परन्तु
लिया हुआ व्रत
कभी नहीं तोड़ना चाहिये,
किसी का दिल रखना
जरूरी नहीं
व्रतों को बनाये रखना जरूरी है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अकसर लोग
उपहार को
कीमत से तौलते हैं,
मगर मेरा मानना है
उपहार की सच्ची कीमत
प्यार से ही है,
इसीलिये
उपहार को कीमत से नहीं
प्यार से ही तौलना चाहिये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब
किस्मत रूठ जाती है
तब
आप बे-सहारा नहीं होते;
क्योंकि
गुरु का सहारा रहता है
और
जब गुरु रूठ जाते हैं
तब सारे सहारे छूट जाते हैं
और
आप बे-सहारा हो जाते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

रिश्तों की बुनियाद
प्यार नहीं ज़िद है,
आपको आश्चर्य अवश्य होगा-
परन्तु
रिश्तों को
बनाये रखने की ज़िद ही
आपके रिश्तों को बचाये रखती है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जैसे-जैसे
ज़िंदगी बढ़ रही है
वैसे-वैसे
उलझनें भी बढ़ रही हैं;
क्योंकि
ज़िंदगी के बढ़ने पर
हम चीज़ों को रिश्तों को
बढ़ाते जा रहे हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आप
बड़े बनकर भी
बड़े होने का
आनंद नहीं लूट पाये,
तो आपके बड़े होने का
फायदा क्या?
इसीलिये
जिस भी अवस्था में रहें
उसका आनंद अवश्य लूटें...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब–जब आप
पर को अपना मानते हैं,
तब–तब आप
दुःखी होते हैं
और
जब–जब आप
अपनों को भी
अपना नहीं मानते हैं,
तब–तब आप
सुखी होते हैं;
सुखी–दुःखी होने का
यह सबसे बड़ा कारण है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

विश्वास
एक ऐसी चीज़ है
जिसके टूटने पर
दिल भी टूट जाता
और रिश्ते भी,
इसीलिये
सब कुछ टूट जाये
पर विश्वास मत तोड़ना...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप किसी को
कुछ दे नहीं सकते
न ही किसी का
कुछ ले सकते हैं,
हर कोई अपनी
किस्मत लेकर आता है,
इसीलिये
चिंता मत कीजिये
जिसने पेट दिया है
वह भोजन भी देगा ...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

गर
कंधे पर हाथ रखने वाला
कोई नहीं है,
इसीलिये
बचकर रहना मित्रो !
ज़माना बड़ा खराब है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ज़िन्दगी के खेल
बड़े निराले होते हैं,
कुछ लोग भोगते कम हैं
पर भुगतते ज़्यादा हैं
और
कुछ लोग भुगतते कम हैं
पर भोगते ज़्यादा हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

लोग
कुछ कार्य
स्वार्थ भावना से करते हैं
तो कुछ कार्य
नि:स्वार्थ भावना से;
सफल दोनों हो सकते हैं
परंतु
नि:स्वार्थ भावना से
किया गया कार्य ही अमर होता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मनुष्य और गिरगिट
दोनों ही रंग बदलते हैं,
फर्क सिर्फ इतना है
गिरगिट स्वभाव से रंग बदलता है
और
मनुष्य मौके पर...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपके शरीर में
आँख–हाथ–कान
महत्त्वपूर्ण अंग हैं
मगर
कंधा उससे भी
महत्त्वपूर्ण अंग है,
क्योंकि
आँख–हाथ–कान तो
खुद के लिये काम आते हैं,
परन्तु
कंधा दूसरों के भी काम आता है...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जीत के लिये
आपको सिर्फ अंक नहीं
दूसरों से अच्छे अंक चाहिये,
इसीलिये
सापेक्षता को अपनाइये
निरपेक्षता को नहीं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिन्हें
अपनों को खोने का डर हो,
वो ही लोग
गलती न होने पर भी
गलती स्वीकारते हैं
और
माफी भी माँगते हैं...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सही बातें
प्रीति

बचपने में
हम माता-पिता की
यहाँ तक कि गुरुदेव की
बहुत सी बातें
नज़रअंदाज़ कर देते हैं,
मगर बड़े होकर
जब-जब
हम असफल होते हैं
तब-तब उनकी बातें
नज़रों के सामने घूमती हैं...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

बीते कल को
याद मत कीजिये,
आने वाले कल की
फरियाद भी मत कीजिये,
जो होना है सो होना है,
विकल्पों के कारण
जीवन को बर्बाद मत कीजिये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दूसरों की
रक्षा करने वाले बहुत हैं,
परन्तु
खुद की
रक्षा करने वाले बहुत न्यून हैं;
दूसरों की रक्षा तो करें,
परन्तु
खुद की रक्षा पहले करें...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

संसार में
सहारा देने वाले
कुछ एक-दो ही लोग हैं,
मगर
धोखा देने वाले
पग-पग पर खड़े हैं,
इसीलिये
चलिये तो,
लेकिन
बहुत सोच समझकर...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपके व्यक्तित्व का निर्माण
आपकी मान्यताओं से ही
होता है,
इसीलिये
मान्यतायें कुछ ऐसी हों
जिससे आपके
अच्छे व्यक्तित्व का
निर्माण हो सके...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जो चीज़ें
आप देख रहे हैं
उन पर विश्वास करें,
जो चीज़ें
आप नहीं देख पाते हैं
पर वो हैं
उन पर अधिक विश्वास करें,
क्योंकि
न दिखने वाली चीज़ों से ही
हमारा जीवन चल रहा है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपने शब्दों को
अपने चिंतन को
वहीं कहें
जहाँ लोग उसे
सुनने के इच्छुक पुनः
वरना
बंजर भूमि में डाले गये
जल की तरह
वे व्यर्थ चले जायेंगे...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आपके व्यक्तित्व को
महान बनाने की शक्ति
आपके गुण
और स्वभाव में ही है,
इसीलिये
गुणों को बढ़ाइये
और
स्वभाव को मधुर बनाइये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपने जीवन में
होने वाली घटनाओं का अनुभव
बहुत गौर से कीजिये,
क्योंकि
छोटी हों या बड़ी
घटनायें आपके जीवन को
पलट सकती हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जैसे
उड़ता हुआ झंडा
बताता है
हवा के रुख को,
वैसे ही
व्यक्ति की भाषा बताती है
उसके भावों के रुख को...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कई बार
घनिष्ठता के बढ़ते ही
मर्यादा खत्म हो जाती है,
इसीलिये
घनिष्ठता उतनी ही बढ़ायें
जिससे मर्यादा न घट पाये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब आपके अंदर
घमण्ड बढ़ने लगे
तब समझ लीजिये
पतन का समय निकट है
और
जब विनम्रता बढ़े
तब समझ लीजिये
पतन का समय निकल चुका है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किसी भी व्यक्ति को
बुरी नज़र से मत देखिये,
व्यक्ति कभी बुरा नहीं होता
बुरी तो उसकी आदतें,
उसका नज़रिया होता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जो लोग
दूसरों के गुण देखकर
घृणा करते हैं,
उनसे मेरा कहना है-
आप घृणा को छोड़कर
गुणों को अपनाइये
आप भी प्रशंसनीय हो जायेंगे...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिसके जीवन में
चारित्र का वृक्ष लगा हो
उसे ही
ज्ञान के मधुर फल मिलते हैं,
जैसे बिना वृक्ष के
फल नहीं पुनः
वैसे ही बिना चारित्र के
ज्ञान नहीं होता...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

ज्ञान और चारित्र
कभी भी
खरीदे नहीं जा सकते,
इनका निर्माण
स्वयं के पुरुषार्थ से ही
किया जाता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

भले ही आप
हर काम में सुस्त रहें
पर
गुरु की सेवा के लिये
हर दम चुस्त रहिये,
क्योंकि
गुरु की सेवा से
आपके सारे काम
तन्दरुस्त रहते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुनिया में
चारित्र से महत्त्वपूर्ण वस्तु
कोई और नहीं है,
ध्यान रखिये–
बिन चारित्र का जीवन
सूखे ठठेरों के समान
निस्सार है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर
आपके पास चारित्र है
तो आप गरीब होकर भी
अमीर हैं,
चारित्र नहीं है
तो अमीर होकर भी गरीब हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अपनी तारीफ सुनकर भी
शान्त और गंभीर रहिये
फूलिये मत,
क्योंकि
फूला गुब्बारा ही फूटता है
पिचका गुब्बारा सुरक्षित रहता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

भूख बढ़ाने के लिये
परिश्रम को बढ़ाइये
और
भोग घटाने के लिये
संयम को बढ़ाइये,
यह मेरा ही नहीं
महान लोगों का भी अनुभव है...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

मन में उत्पन्न
पाप का रोग
किसी भी दवा से नहीं मिटता,
उसे मिटाने की दवा
मन के ही पास है,
मन को मनाइये
और
पाप को मिटाइये...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जब आप
सुख-दुःख की चिन्ता से
परे हो जाते हैं,
तब आप
आसमान से भी
ऊपर हो जाते हैं,
इसीलिये
सुख-दुःख की
चिन्ता को घटाइये
और
ऊँचाइयों को छू जाइये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जीवन में अच्छे विचारों को गुनने से
चिन्ता घटेगी,
सोच बढ़ेगी
और
सफलता के लिये
नया जुनून भी जागेगा...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

चिन्ता करने से
कोई भी काम पूरा नहीं होता,
बल्कि
पूरे होते काम
अधूरे रह जाते हैं,
काम पूरे करना हो
तो चिन्ता से नहीं
चतुराई से काम लें...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कितना भी बड़ा अपराधी
क्यों न हो
उस पर भी दया कीजिये,
क्योंकि
दुनिया में
ऐसा कोई भी नहीं
जिससे कभी भी
अपराध न हुआ हो...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिन्हें कुछ
कर दिखाने का जुनून है,
वे ही लोग
हर अवसर में
हर अवस्था में
अपने कर्तव्य को
पूरा करना जानते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

किसी के गुणों को
धन से
नहीं खरीदा जा सकता,
अगर आप
उन गुणों की प्रशंसा करेंगे
तो आप उन गुणों को
अपने अंदर जरूर पा सकेंगे...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जिस कार्य के प्रति
आपकी प्रीति होती है
उसी के लिये
आप पुरुषार्थ करते हैं,
इसलिये
जिस भी काम को
आप करना चाहते हों,
उसके प्रति प्रीति बढ़ाइये...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप जब भी
किसी बात को तूल देते हैं,
तो आप
अनुकूलता को भी
प्रतिकूल कर लेते हैं,
इसीलिये
तूल न देकर
कूल रहिये,
तभी आप अनुकूल रह पायेंगे...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कभी भी
अपनी प्रशंसा से
प्रभावित नहीं होना चाहिये,
क्योंकि
अकसर लोग
प्रशंसा से प्रभावित होकर
प्रतिकूल काम कर बैठते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

जो लोग
कष्ट के समय
कष्ट से प्रीति करते हैं
वे ही प्रगति करते हैं,
इसीलिये
प्रगति के लिये
कष्टों से डरिये मत
कष्टों से प्रीति करिये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

खुश रहिये
ये दुःखों को भुलाने का
सबसे सुन्दर उपाय है
और
उदास मत रहिये
ये सुख को बढ़ाने का
सबसे सुन्दर उपाय है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

आप परायों के
दु:खों को दूर करके
उन्हें अपना बना सकते हैं
और
अपनों को दु:ख देकर
उन्हें पराया भी बना सकते हैं,
अब आपको जैसा लगे
वैसा करें...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सही बातें
प्रीति

अकसर लोग
दूसरों के दोषों को
देखने में लग जाते हैं,
इसीलिये
लोग अपने उद्देश्यों से
भटक जाते हैं,
अपने उद्देश्य में
बने रहने के लिये
दोषों को देखना बंद कीजिये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कठिन
राग छोड़ना नहीं है
कठिन है
बैर छोड़ना,
सच है-
लोग एक बार
दोस्ती भूल सकते हैं
मगर
दुश्मनी कोई नहीं भूलता है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

पुण्यवश
शत्रु भी अनुचर हो जाते हैं
और
पापवश
अनुचर भी शत्रु हो जाते हैं,
इसीलिये
शत्रु घटाना हो
मित्र बढ़ाना हो
तो पुण्य को बढ़ाइये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कभी भी
किसी के अधीन मत रहिये,
आधीनता में आपको
क्रोध
और
अपशब्द सहना पड़ेगा,
इसीलिये कहा है–
अधीनता से भली स्वाधीनता,
आधीनता करेगी परेशान
स्वाधीनता ही है महान...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

कई बार हम गुस्से में
ऐसा अनर्थ कर जाते हैं,
जिन्हें हम
सोच भी नहीं पाते हैं,
इसीलिये
गुस्से के समय शान्त रहें
कुछ न करें
वरना
अनर्थ निश्चित है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

विवेक की कमी
आपको दुरुपयोग सिखाती है
और
विवेक ज्ञान आपको
सदुपयोग सिखाता है,
अतः
जिन्हें भी
जीवन का सदुपयोग करना हो
उन्हें
विवेक को बढ़ाना चाहिये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सही बातें
प्रीति

हमेशा बच्चों को
कहानी सुनाते रहना चाहिये
और हो सके तो
स्वयं भी
कहानी सुनते रहना चाहिये,
बुराइयाँ घटाना
और
संस्कार बढ़ाना
कहानियों का यही काम है...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दुनिया का
सबसे भयंकर भूत
भय का भूत है,
अन्य भूतों का उतरना
सरल है,
पर
भय का भूत उतरना
अत्यंत कठिन है;
इसीलिये
दुनिया के भूतों से नहीं
भय के भूतों से डरिये...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

दोस्त को दुश्मन
और
दुश्मन को दोस्त बनने में
देर नहीं लगती;
इसलिये
दोनों से बचें...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

अगर आप
वादा करना नहीं भूलते हैं,
तो
वादा निभाना भी
मत भूलिये...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

सफलता के बाद
आप अपने
कार्य क्षेत्र को बढ़ाये,
वरना
आपकी प्रतिभा
घटती जायेगी...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

छोटा इंसान
बड़ा तभी बनता है,
जब वह
लगन और भाग्य को
निरंतर बढ़ाता है;
ऊँचाइयों को पाना है
तो लगन लगाइये...

✍ श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

लोग आपकी कद्र
तभी तक करते हैं,
जब तक आपके प्रति
उनकी श्रद्धा हो,
श्रद्धा न होने पर
वे अनादर प्रारंभ कर देते हैं...

श्रुतसंवेगी आदित्यसागर

रिश्तों में गहराई की
उतनी ही जरूरत है
जितनी की
श्रीखण्ड में दही की...

✍श्रुतसंवेगी आदित्यसागर